



[illegible]

ॐ श्री हनुमद्विष्णु कवचारवा मालामनुपा ॥ विनियोगः ॥ ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ज्ञान
याय नमः ॥ अंगुष्ठाख्यानमः ॥ ॐ ह्रीं त्रुडमूर्क्य तर्जनीख्यानमः ॥ ॐ ह्रीं वायुपूत्राय नमः ॥
माख्यानमः ॥ ॐ ह्रीं अग्निगर्तीय अनामिकाख्यानमः ॥ ॐ ह्रीं त्रामर्ति कनिष्ठिकाख्या
नमः ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्माक्षुदिनिवात्रलाय कत्रतलपूत्राख्यानमः ॥ ॐ ह्रीं कत्रन्यासः ॥ ॐ ह्रीं
दयादिन्यासः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ज्ञानयाय नमः ॥ हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीं त्रुडमूर्क्य लित्रसखाहा ॥ ॐ
ह्रीं वायुपूत्राय लिखाये वषट् ॥ ॐ ह्रीं अग्निगर्तीय कवचाय ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं त्रामर्ति नमः ॥
ह्रीं वायुपूत्राय ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्माक्षुदिनिवात्रलाय अक्षुय ह्रीं ॥ ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ज्ञान
हनुमत्कमकादहा मूखाम्बुजं ॥ ॐ ह्रीं वतं वावलाय तंदला वादूत्रिलाचनं ॥ ह्रीं कात्रे ॥
सदर्थे ॥ ॐ ह्रीं वतं वतं जगत्तुयं ॥ ॐ ह्रीं दिवन्दि तंदवं कपिकाटिसमन्वितं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं त्वाज

पद्मविकवचपत्रमाहूतं ॥ १ ॥ उं ह्रुदिगुणगजा नूरुह नमग बुद्धा मुल किसहिका
यचोत्रया पुपिष्ठा च बुद्धना कस सल्ल किनी जकिनी वं काल समुच्चाटना यमात्र कनकस्वा
हा ॥ १ ॥ उं अग्निदिगुणगमका नूरुह नमग अग्न्या मुल किसहिका यचोत्रया पुपिष्ठा च बुद्ध
ना कस सल्ल किनी जकिनी वं काल समुच्चाटना यमात्र कनकस्वाहा ॥ २ ॥ उं यमदिगुण
महिषा नूरुह नमग दधुल किसहिका यचोत्रया पुपिष्ठा च बुद्धना कस सल्ल किनी ज
किनी वं काल समुच्चाटना यमात्र कनकस्वाहा ॥ ३ ॥ उं निर्जुतिदिगुणनना नूरुह
नमग खड्गल किसहिका यचोत्रया पुपिष्ठा च बुद्धना कस सल्ल किनी जकिनी वं काल
समुच्चाटना यमात्र कनकस्वाहा ॥ ४ ॥ उं वज्रलदिगुणगमकना नूरुह नमग पाष्ठा
किसहिका यचोत्रया पुपिष्ठा च बुद्धना कस सल्ल किनी जकिनी वं काल समुच्चाटना यमा

नक्षत्रदस्ताहा ॥ ८ ॥ उं वायुदिग्गुणमृगानुरहन्मगजं कृष्णकिं सहिताय चोत्रवा
पुषिष्ठाचवृक्षनादसंभक्तिनीजकिनीवतालसमृद्धाटनायमानं नक्षत्रदस्ताहा ॥ ९ ॥
उं कृत्वादिग्गुणमृगानुरहन्मगजं कृष्णकिं सहिताय चोत्रवा पुषिष्ठाचवृक्षनादसं
भक्तिनीजकिनीवतालसमृद्धाटनायमानं नक्षत्रदस्ताहा ॥ १० ॥ उं शुभनदिग्गुणमृ
गानुरहन्मगजं कृष्णकिं सहिताय चोत्रवा पुषिष्ठाचवृक्षनादसंभक्तिनीजकिनी
वतालसमृद्धाटनायमानं नक्षत्रदस्ताहा ॥ ११ ॥ उं जंगत्रिदिग्गुणमृगानुरहन्मगजं
नक्षत्रदस्ताहा ॥ १२ ॥ उं उं जंगत्रिदिग्गुणमृगानुरहन्मगजं कृष्णकिं सहिताय चोत्रवा
पुषिष्ठाचवृक्षनादसंभक्तिनीजकिनीवतालसमृद्धाटनायमानं नक्षत्रदस्ताहा ॥ १३ ॥
उं उं जंगत्रिदिग्गुणमृगानुरहन्मगजं कृष्णकिं सहिताय चोत्रवा पुषिष्ठाचवृक्षनादसं
भक्तिनीजकिनीवतालसमृद्धाटनायमानं नक्षत्रदस्ताहा ॥ १४ ॥

स्वाहा ॥ १० ॥ उं बु क्र म ल ह र ह न म ग प ह्रीं ल ल कि स हि त य सो त र का पु पि ण च उ
ना क स ण कि नी ज कि नी व त ल स मू हा ट ना य म प्र क र क स्वा हा ॥ ११ ॥ **सु ति दि ग्ध न**
॥ ॥ उं ड्रीं पीं पं यं प्र च लु प्र ता प नु क द ल मू ख ह न म ग ह्रीं वि ग ति वं ध म ति वं ध वा वं
ध मा र्ग वं ध स र्प वं ध वी र वं ध मृ ष्टि क वं ध ब्या धु वं ध ग र्ज वं ध ण दू ल वं ध मृ ग वं ध
दू र वं ध वि ष वं ध वी र वं ध दू र वं ध रं ग लु वं ध ह ग वं ध पु ग वं ध पि ण च वं ध क र
वं ध लू ल वं ध स र्प द व ता वं ध ना क मू ख वं ध ना क स र्ग वं ध द्या त वी र प्र ता प नो ड
प ल ह न म ह र ह न ना य व ड क लु ल को पी न व न मा ला ना म ध ना य स र्वे ग हा ट
ना ट ना य व ड ना क स मू हा ट ना ट ना य क र स मू हा ट ना ट ना य ना क
स मू हा ट ना ट ना य सो त र स मू हा ट ना ट ना य ल क स मू हा ट ना ट ना य

[illegible]

ॐ हूं रुद्र स्वाहा ॥ उं श्रीवीरह नमः ॐ मुं मुं मुं मुं मुं मुं मुं मुं रुद्र स्वाहा ॥ उं श्रीवीरह नमः ॐ
क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रौं रुद्र स्वाहा ॥ उं श्रीवीरह नमः ॐ कुं कुं कुं कुं कुं कुं कुं रुद्रः
स्वाहा ॥ उं श्रीवीरह नमः ॐ क्लौं क्लौं क्लौं क्लौं क्लौं क्लौं रुद्र स्वाहा ॥ उं श्रीवीरह नमः
गहं गहं गहं गहं गहं गहं रुद्र स्वाहा ॥ उं हों पूर्व मुखवानत्रमुखहनूमतं लें लें लें लें लें लें
सकललक्षणकुसंहानकाय हूं रुद्र स्वाहा ॥ १ ॥ आग्नेयमुखमस्त्यमुखहनूमतं लें लें लें लें लें
लें लें सकललक्षणकुसंहानकाय हूं रुद्र स्वाहा ॥ २ ॥ दक्षिणमुखकूर्ममुखहनूमतं मं मं मं
मं मं मं सकललक्षणकुसंहानकाय हूं रुद्र स्वाहा ॥ ३ ॥ उत्तरमुखवज्राहमुखहनूमतं रूं
रूं रूं रूं रूं सकललक्षणकुसंहानकाय हूं रुद्र स्वाहा ॥ ४ ॥ उं पश्चिममुखनागसिंहमु-
खहनूमतं वैं वैं वैं वैं वैं वैं सकललक्षणकुसंहानकाय हूं रुद्र स्वाहा ॥ ५ ॥ उं वायुमुखगरुड

मुखहनुमत्पं पं पं पं पं पं पं सकललक्षणसंहारकाय हूं हूं हूं हूं ॥ ६ ॥ उं उं उं उं मुखः
 धात्रमुखहनुमत्सं सं सं सं सं सं सं सकललक्षणसंहारकाय हूं हूं हूं हूं ॥ ७ ॥ उं उं
 धानमुखवृषमुखहनुमत्हं हं हं हं हं हं हं सकललक्षणसंहारकाय हूं हूं हूं हूं ॥ ८ ॥
 उं उं मुखवर्गुलमुखहनुमत्कुं कुं कुं कुं कुं कुं कुं सकललक्षणसंहारकाय हूं हूं हूं हूं
 हूं हूं ॥ ९ ॥ उं उं मुखहालामुखहनुमत्ओं ओं ओं ओं ओं ओं ओं सकललक्षणसंहार
 काय हूं हूं हूं हूं ॥ १० ॥ उं सर्वगुणमुखहनुमत्कुं कुं कुं कुं कुं कुं कुं सकललक्षण
 संहारकाय हूं हूं हूं हूं ॥ ११ ॥ उं सीता नामपादकाधनाय महावीरवायुपूजाय क
 निष्ठाय बुद्धिनिष्ठाय नृकादधारादमूर्क्यमहाबलपनाकुमाय लानुमंगलय सनय
 हाय चतुर्मुखवनप्रसादाय महालयनरकाय पं पं पं पं पं पं पं हं हं हं हं हं हं हं

होँ उँ कुँ मुँ कुँ कुँ कुँ श्रीवीरहन्मयं नमः॥ १॥ कादलवीरहन्मयं नमः॥ २॥ कनकलानि
कनकनगुहिकनकनमृष्टिकनकनमहानागं कनकनजलरयंकनकनजलविष्टंकन
कनमहाविजयंकनकनसोलगं कनकनसर्वप्रविजयंकनकनमहालक्ष्मीदहिद
हिहूँ रुद्रस्वाहा॥ ॥ ३॥ गतकवचं दिव्यं निवनपत्रिकीर्तितम्॥ यः प० १०॥ यथात
त्यासर्वोन्कामानवाप्नुयात्॥ ४॥ प्रिकालमककालं वापि वारं यः प० १०॥ नेत्रः॥ ५॥
गन्निपूतकलाकित्वा सपूमान्तरगतप्रियम्॥ ६॥ मन्त्रः॥ ७॥ कचकुलहिल्लाचतुर्वीर
प० १०॥ यदि॥ कथापस्मानकृष्टादिगीवहन्निवातर्णी॥ ८॥ यः प० १०॥ कवचं दिव्यं ह
न्मन्त्रानगत्यतः॥ ९॥ प्रिः सकृद्वयथाज्ञानं सापिपूष्यवताम्वतः॥ १०॥ दवमस्य
कीविधिवत्पूज्यार्थं समाचरत्॥ ११॥ कादलगतं जप्यादलं हवनादिकम्॥ १२॥

[illegible]

